जलछाजन परियोजना जामताड़ा

लोक प्रेरणा

बेलाबगान मेन रोड, देवघर–814112 (झारखण्ड)

E-mail : info@lokprerna.org / lp.jharkhand@gmail.com

श्री अनिलसन लकड़ा
उप विकास आयुक्त -सह- प्रोग्राम मैनेजर
जलछाजन प्रकोष्ठ -सह- आंकड़ा केन्द्र,
जिला- जामताड़ा, झारखण्ड सरकार

संदेश

सतत विकास के विभिन्न आयामों में शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका, पर्यावरण, जल जंगल जमीन आधारित जैव विविधता के संरक्षण और इन आयामों पर आधारित सर्वांगिण विकास के लिए महत्वाकांक्षी योजनाओं में से एक सरकार का एक महत्वपूर्ण योजना जलछाजन विकास कार्यक्रम है। यह परियोजना सम्पूर्ण झारखण्ड राज्य के अंतर्गत जलग्रहण क्षेत्रों को चिन्हित कर संचालन किया जाता है। इस परियोजना का क्रियान्वयन ग्रामीण विकास विभाग के अंतर्गत झारखण्ड राज्य जलछाजन मिशन के सौजन्य से स्टेट लेवेल नोड्ल एजेन्सी की दक्ष टीम द्वारा स्थानीय ग्रामीण समुदाय के सहयोग से लाईन डिपार्टमेंट या स्वयंसेवी संगठन (CSO) के द्वारा करवायी जाती है। राज्य के प्रत्येक जिले में इस प्रकार के सर्वांगिण सतत विकास हेतु जलछाजन कार्यक्रम को सरकार द्वारा अपनाया गया है। NB- RIDF जलछाजन परियोजना राज्य के 15 जिलों में वर्ष 2015-16 में शुरूआत की गयी। इन परियोजनाओं का सफल क्रियान्वयन हेतु जिला ग्रामीण विकास अभिकरण के जलछाजन प्रकोष्ट -सह- आंकड़ा केन्द्र द्वारा किया जाता है। जिसका नियमित पर्यवेक्षण, देखरेख एवं प्रगति की समीक्षा उपविकास आयुक्त एवं जिला तकनीकी विशेषज्ञ के नेतृत्व में की जाती है।

झारखण्ड राज्य के जामताड़ा जिले के अंतर्गत फतेहपुर और नाला प्रखण्ड के चयनित 52 गांवों में **NB- RIDF** जलछाजन परियोजना स्थानीय क्रियान्वयन एजेन्सी लोक प्रेरणा के द्वारा किया गया। परियोजना का क्रियान्वयन लोक प्रेरणा के दक्ष टीमों द्वारा **Ridge -to- Valley Approach** आधारित तकनीकि रूप से सही साईट सेलेक्शन तथा ढंचागत संरचनाओं का निर्माण उत्कृष्ट रूप से किया गया है। स्थानीय नालों / जोरिया में सिरीज में चेक डेम का निर्माण किया गया जो काफी उत्कृष्ट है। निर्मित संरचनाओं के आस-पास के खेतों की मिट्टी में इस विषम सुखाड़ के बावजूद भी नमी दिखी तथा खेतों में हरियाली काफी मात्रा में दिखा। ग्रामीणों की खुशियों से भरा संवाद भी देखनें को मिला और उम्मीद कर सकते है कि इस परियोजना के फलस्वरूप आगे आने वाले दिनों में यहाँ के समुदाय का आर्थिक व सामाजिक उन्नयन हो सकेगा तथा स्थानीय स्तर पर जल ग्रहण क्षेत्र में जैव विविधता के अनुरूप सतत विकास स्वत: परिलक्षित हो सकेगी, बशर्त्ते संरचनाओं का सदउपयोग ग्रामीण सही रख-रखाव के साथ सुनिश्चित करें।

समय-समय पर लोक प्रेरणा इन क्षेत्रों में अन्य विकास कार्यक्रमों को लाकर इस क्षेत्र के आदिवासी, महिला एवं अन्य गरीब वंचित समुदाय को सहयोग करें। लोक प्रेरणा ने न केवल अच्छी संरचनाओं का ही निर्माण करवाये हैं बल्कि इसके साथ-साथ स्थानीय सीमांत किसानों, महिला किसानों तथा आदिवासी समुदाय का समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रमों को अन्य विभागों से सामन्जस्य बैठाकर कन्वर्जेन्स करने का प्रयास किया जिससे आज इन क्षेत्रों में मत्स्य पालन, बिरसा हरित ग्राम योजना अंतर्गत फलदार वृक्षों का बगीचा, वन विभाग के सहयोग से काजू के बगीचों का सहयोग, मनरेगा के अंतर्गत फलदार वृक्षों का रोपन बड़े पैमाने पर इन क्षेत्रों में सुनिश्चित हुआ हैं। मैंने व्यक्तिगत रूप से कई बार जिला तकनीकि विशेषज्ञ अभियंता के साथ क्षेत्र भ्रमण किया। क्षेत्र भ्रमण तथा अवलोकन के दौरान ग्रामीणों के द्वारा विभिन्न मांगों को भी संवेदनशीलता के साथ लिया और उसको सुनिश्चित करवाने के लिए जिला द्वारा प्रयास किया गया। लोक प्रेरणा की टीम द्वारा मेरे तथा जिला तकनीकि विशेषज्ञ द्वारा दिये गये सुझावों को अक्षरश: उतारने की कोशिश की गयी और कार्य की गुणवक्ता को अक्षुण्ण बनाये रखने का प्रयास किया गया।

अत: उमीद करता हूँ कि आने वाले दिनों में संस्था लोक प्रेरणा अपने अनुभवों को विकसित करते हुए झारखण्ड के अन्य क्षेत्रों में इसी प्रकार से जमीन से जुड़े विकास का काम करती रहेगी। इस महती कार्य के लिए मैं लोक प्रेरणा की टीम को धन्यवाद देता हूँ।

श्री अनिलसन लकड़ा
उप-विकास आयुक्त जामताड़ा

श्री आदित्य नारायण

अभियंता -सह- जिला तकनीकि विशेषज्ञ

जलछाजन प्रकोष्ठ -सह- आंकड़ा केन्द्र,

जिला- जामताड़ा, झारखण्ड सरकार

संदेश

मैं जब जिला तकनीकि विशेषज्ञ जामताड़ा के रूप में योगदान किया था तो NABARD - RIDF जलछाजन परियोजना का स्वीकृत NRM का काम महज 3 - 4 महीने में पूरा करवाना मेरे लिए सबसे बड़ी चुनौती लगी थी, लेकिन मैं परियोजना क्रियान्वयन एजेंसी का शुक्रगुजार हूँ कि डी. डी. सी. सर के निर्देशानुसार लोक प्रेरणा की टीम को जैसे - जैसे दिशा निर्देश तथा सहयोग किया गया प्रत्येक सदस्य ने अक्षरश: पालन किया। इनलोगों ने दिन - रात एक कर अथक परिश्रम किया और कुशल रणनीति से युद्ध स्तर पर काम करते हुए महज 3 महीने में लगभग सभी कामों को पूरा किया । भले ही मुझे **Site Selection**, तकनीकि मापदंड इत्यादि को देखने - समझने और उचित सलाह देने के लिए कई बार क्षेत्र में उपस्थित होना पड़ा ।

कार्य में लगे कृषि स्थाई समिति के सदस्य, लोक प्रेरणा की टीम, अन्य महिला समूहों की टीम से नियमित मुलाकात होती रही और कार्य क्षेत्र के बहुत से लोगों को विभिन्न तकनिकियों के बारे में बताया गया तथा इस जल ग्रहण क्षेत्र के अधीन निर्माण की गई संरचनाओं के बारे में जानकारी दी गई जिसका परिणाम ये रहा कि 90 दिनों के अंदर ही सही Site Selection कर 43 चेक डेम, 18 तालाब, 12 डोभा एवं Loose Boulder Structure तथा एग्रीकल्चर से जुड़े कार्य संभव किये गये, कार्य की गुणवत्ता भी आगे संतोषप्रद परिणाम देने में सक्षम होगा।

लोक प्रेरणा के निदेशक श्री सतीश कुमार कर्ण को विशेष धन्यवाद देना चाहूँगा कि काफी चुनौतियों का सामना करते हुए भी उन्होंने अपनी टीम तथा परियोजना की आवश्यकताओं को पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ा। शारीरिक तथा मानसिक रूप से लगे रहे और गुणवत्तापूर्ण कामों को पूरा करने में अथक प्रयत्न किया। फतेहपुर तथा नाला प्रखण्ड में जलछाजन परियोजना से जुड़ी जितनी भी संरचनाओं और संबंधित गतिविधियों का क्रियान्वयन किया गया और ग्रामीणों से संवाद करने का अवसर मिला तो पाया कि परियोजना क्रियान्वयन पूर्व की स्थिति से आज की स्थिति मे काफी बदलाव परिणाम के रूप में आए हैं। जल संरक्षण के लिए काफी संरचनाएँ बनाई गई वनस्पतियों, पशुपालन, खेती व उद्यान उत्कृष्ट रूप से इन क्षेत्रों में उपस्थित है जो आगे झारखण्ड के लिए मॉडल के रूप में दिख सकेगा। वास्तव में मछलीपालन, मिट्टी संरक्षण, नमी इत्यादि मे इजाफा हो रहा है और ग्रामीणों के अनुसार भविष्य में और भी इस क्षेत्र में उन्नति के आसार हैं । इन क्रियाकलापों से जलग्रहण क्षेत्र के अंतर्गत ग्रामीण काफी खुश नजर आते हैं साथ ही खेती योग्य जमीन का अधिक उपयोग होने लगा है और जमीन की उत्पादक क्षमता भी बढ़ने लगी हैं। हम चाहेंगे कि संस्था भविष्य में भी इसी प्रकार सराहनीय कार्य करती रहे तथा समुदाय की आँखों में चमक बरकरार रहे ।

सधन्यवाद !

श्री आदित्य नारायण

अभियंता -सह- जिला तकनीकि विशेषज्ञ

जलछाजन प्रकोष्ट -सह- आंकड़ा केन्द्र

जिला जामताड़ा, झारखण्ड

प्रस्तावना

तत्कालीन दुमका जिले का जामताड़ा सब डिविजन को 26 अप्रैल 2001 को चार प्रखंड - कुंडहित, नाला, जामताड़ा और नारायणपुर को अलग करके जिला बनाया गया था । कालांतर में करमाटांड़ और फतेहपुर नामक दो नये प्रखंड बने। अपने लंबे इतिहास में यह हेतमपुर राज और बर्धमान महाराजाधिराज के तहत बीरभूम का एक हिस्सा था । जिले में आज भी राज परिवार से कुछ लोग जीवित हैं । जामताड़ा के राजा ने जामताड़ा और आसपास के क्षेत्र के लोगों की संस्कृति और जीवन पर कुछ चिरस्थायी छाप छोड़ा था । जामजुरी के जमींदार परिवार का कुंडहित और फतेहपुर प्रखंड के एक बड़े हिस्से पर प्रभाव था। आज कई ऐतिहासिक स्थल अध्ययन और अन्वेषण की प्रतीक्षा कर रहे हैं । सिद्धू - कान्हू के समकालीन अर्थात वर्ष 1854 - 55 में सिद्धू-कान्हू के संथाल विद्रोह के दौरान यह क्षेत्र अशांत था । ऐसा कहा जाता है कि विद्रोही गाँव - गाँव व्याप्त हो गए थे । किंवदंती है कि माधोपुर जो अब फतेहपुर प्रखंड में है, के गोपाल मंडल ने क्रांतिकारी नेताओं को तीन मन चावल और एक रात की दावत भी दी थी । बुद्धिजीवी विद्वान डॉ शरत कुमार मंडल उनके पोते के पोते हैं । सिद्धू - कान्हू के विद्रोह के बाद एक अलग संथाल परगना जिला बनाया गया था। बिहार से पहले 1905 ई. तक यह बंगाल का हिस्सा था । इस क्षेत्र के लोग मैथिली, संथाली और हिंदी बोलते हैं, लेकिन संथाली आदिवासियों की भाषा है । बंगला भी व्यापक रूप से बोली जाती है । जाने - माने लेखक श्री अमित बेसरा ने जामताड़ा को दुनिया के नक्शे पर ला खड़ा किया है। वर्ष 2010 में प्रकाशित सबसे ज्यादा बिकने वाले उपन्यास इट्स डाइंग टाइम - ए चिलिंग इंडियन थ्रिलर और वर्ष 2013 में प्रकाशित बी द चेंज के लेखक श्री अमित बेसरा ही हैं ।

जामताड़ा जिला झारखंड के चौबीस जिलों में से एक है । जामताड़ा इस जिले का प्रशासनिक मुख्यालय है । यह 23^{0} 10‘ और 24^{0} 05‘ उत्तरी अक्षांश रेखा और 86^{0} 30‘ और 87^{0} 15‘ पूर्वी देशांतर रेखा के बीच स्थित है। भारत के कुल 640 जिलों में से 250 अत्यंत पिछड़े जिले हैं। वर्ष 2006 में भारत सरकार के द्वारा जामताड़ा को भी अत्यंत पिछड़े जिले के रूप में घोषित किया गया। इस जिले के लोग मुख्यत: वर्षा आधारित खेती पर निर्भर रहते हैं। अत: अधिकांश आबादी आर्थिक दृष्टिकोण से काफी कमजोर है। यहाँ की अधिकांश भूमि पथरीली, पठारी और उबड़ - खाबड़ हैं। भौगौलिक स्थिति के अनुसार यहाँ अपर्याप्त खेती होती है, फलस्वरूप यहाँ के लोगों का मुश्किल से 6 - 7 महीने का ही गुजारा खेती से हो पाता है। अन्य बच्चे महीनों के गुजारे के लिए लोगों को प्राय: मजदूरी, छोटा - मोटा व्यवसाय या फिर पलायन पर मजबुर होना पड़ता है। रोजगार करने वालों में से प्रवासी मजदूरों की भी संख्या कम नहीं है ।

यद्यपि यहाँ की खेती मुख्यत: वर्षा जल पर आधारित है, परन्तु वर्षा जल संचयन, संबर्धन और मृदा क्षरण को रोकने के लिए उपयुक्त तकनीकि तथा उससे संबद्ध संरचनाओं की कमी निहायत ही देखी ता सकती थी। इस नाजुक परिस्थिति में कृषि उत्पादकता और क्षेत्र के लोगों की आय बढाने के लिए पर्यावरण के अनुकूल प्राकृतिक संसाधनों के उचित प्रबंधन को विकल्प के रूप में विकसित किया जाना अतिआवश्यक था।इसके विकल्प के हतु जलछाजन विकास कार्यक्रम एक मात्र इन पठारी क्षेत्रों के लिए सटीक उपाय है जिसके जरिए **Ridge to Valley** सिद्धांतों पर आधारित वर्षा जल एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन किया जाना अतिआवश्यक हो जाता है। विभिन्न अध्ययनों से पता चलता है कि मिट्टी, जल, वनस्पति और उसके पोषक तत्वों के बेहतर प्रबंधनीय विकल्प को अपना कर खेती की उत्पादकता,पोषण और आय इत्यादि की सतत वृद्धि के लिए काफी हद तक बढाया जा सकता है ।

पारिस्थितिक पृष्टभूमि के अनुरूप जामताड़ा जिले के फतेहपुर तथा नाला प्रखंड के 7 पंचायतों के 52 गांवों में ग्रामीण विकास विभाग के झारखण्ड राज्य जलछाजन मिशन के तत्वावधान में जनवरी 2017 से दिसम्बर 2022 तक 9 माइक्रो वाटरशेड एरिया के 5401 हे. भूमि में कार्यक्रम का संचालन परियोजना क्रियान्वयन एजेंसी के रूप में लोक प्रेरणा के द्वारा किया गया, जिसमें **Ridge to valley approach** आधारित रिड्ज लाइन ट्रीटमेंट, ड्रेनेज लाइन ट्रीटमेंट, ग्राउण्ड वाटर रिचार्ज, मृदा संरक्षण, नमी संवर्धन हेतु लक्षित गाँवों के किसानों एवं महिला किसानों का क्षमतावर्द्धन कृषि विकास, बागवानी, पशुधन प्रबंधन, मत्स्य पालन व प्रबंधन, तृणभूमि विकास, वनस्पति प्रबंधन, जैव विविधिता प्रबंधन के क्षेत्र में कौशल विकास करने का प्रयास किया गया और आगे भी लोकप्रेरणा के द्वारा इन क्षेत्रों के सतत विकास के लिए समुदाय और सरकार को मदद करती रहेगी।इस परियोजना के अंतर्गत 13 प्रकार की तकनीकि आधारित गतिविधियों द्वारा दीर्घकालीन विकास हेतु जल प्रबंधन, जल संरक्षण, मृदा संवर्द्धन इत्यादि से जुड़े कार्यों को समुदाय के सहयोग से धरातल पर सफलता पूर्वक उतारा गया ।

उपरोक्त क्रियाकलापों के सफल संचालन में **JSWM / SLNA** के सभी पदाधिकारी विशेषकर श्री लिजलिंग गप्पा IFS, श्री सिद्धार्थ त्रिपाठी IFS, श्री थंगा पाण्डेयन IFS, श्री विनयकांत मिश्रा IFS एवं श्री राम कुमार सिन्हा तथा सभी परियोजना काल में जामताड़ा जिले में पदस्थापित सभी उप विकास आयुक्त - सह - प्रोग्राम मैनेजर, जिला तकनीकि विशेषज्ञ, पंचायती राज प्रतिनिधि गण, ग्राम सभा, समुदाय आधारित संगठन, कृषि स्थाई समितियां, संवेदक, स्थानीय लोग, वाटरशेड डेवलपमेंट टीम, परियोजना में कार्यरत अभियंता इत्यादि की अहम् भूमिका एवं योगदान रहा। इसके लिए लोक प्रेरणा इन हितग्राहियों का धन्यवाद ज्ञापन करती है। यह भी भुलाया नहीं जा सकता कि परियोजना काल में पदस्थापित उप विकास आयुक्त -सह- प्रोग्राम मैनेजर, तथा जिला तकनीकि विशेषज्ञ का क्षेत्रावलोकन तथा मार्गदर्शन से गुणवत्तापूर्ण गतिविधियाँ निष्पादित की जा सकीं । सर्वश्री अनिलसन लकड़ा, वर्तमान उप विकास आयुक्त - सह - प्रोग्राम मैनेजर, जामताड़ा, श्री आदित्य नारायण, डी.टी.ई. तथा श्री विशाल कुमार, निवर्तमान डी. टी.ई. जामताड़ा का लोक प्रेरणा विशेष आभार प्रकट करना चाहती है, जिनके गहन क्षेत्रावलोकन, मार्गदर्शन तथा सहयोग से अल्प अवधि में सफलतम परिणाम के साथ गुणवत्तापूर्ण क्रियाकलापों को पूर्ण किया जा सका।

साभार

श्री माधव कुमार दास
संस्थापक –सह– सचिव

श्री सतीश कुमार कर्ण
संस्थापक –सह– निदेशक

लोक प्रेरणा
बेला बगान, देवघर, झारखंड

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
01	प्रस्तावना	1
02	परियोजना पृष्ठभूमि	2
03	परियोजना से संबंधित समुदाय आधारित संगठन (CBOs)	2
04	परियोजना अंतर्गत गाँवों की सूची	2
05	जलछाजन परियोजना के हितग्राही (Stakeholder)	3
06	जलछाजन विकास दल की पहुँच	3
07	मृदा एवं नमी संवर्धन से संबंधित संरचनाएँ	3
08	जल संचयन हेतु संरचनाएँ	3
09	परियोजना अंतर्गत प्रशिक्षण	3
10	बीज तथा पौधे वितरण	3
11	अभिसरण	3
12	उपलब्धियाँ	4
13	संरचना आधारित परिणाम	4,5,6
14	निष्कर्ष	6
15	समस्याएँ एवं चुनौतियाँ	8

01 परियोजना पृष्ठभूमि

जामताड़ा जिले के फतेहपुर तथा नाला प्रखंड अंतर्गत 7 पंचायतों के अजय नदी तथा सिद्धेश्वर (शिला) नदी के जलागम क्षेत्र के 52 गांवों में 9 माइक्रो वाटर शेड परियोजना अंतर्गत वर्ष 2011 के जनगणना के अनुसार कुल 4910 घरों में से 25970 की आबादी थी जिनमें से 31 गाँवों आदिवासी बाहुल्य है कृषि योग्य भूमि 5115 हे. थी जिनमें से सिंचित भूमि मात्र 523 हे. ही थी। मुख्य खरीफ की खेती धान और रब्बी की खेती में सरसों तथा काफी कम मात्रा में गोभी बैंगन, टमाटर, मिर्च, आलू इत्यादि होते थे। गेहूं की खेती भी काफी कम मात्रा में की जाती थी। क्षेत्र के किसान विशेषत: वर्षा जल पर निर्भर रहते थे। सिंचाई के अन्य साधनों में से अपर्याप्त कुँए तथा कुछ तालाब थे, जो दिसम्बर-जनवरी महीनों में सूख जाते थे। क्षेत्र में अत्यधिक मात्रा में मिट्टी के क्षरण अथवा मृदा अपरदन के फलस्वरूप उपज काफी प्रभावित होती थी। जलस्रोत अथवा संसाधनों की कमी से भी खेती प्रभावित होती थी। साथ ही यहाँ के किसान रासायनिक खाद आदि का उपयोग करते हुए पारम्परिक खेती ही अपना रहे थे। जिनमें से मुख्य समस्याएं निमांकित थे -

- कम वर्षा वाला क्षेत्र।
- जनवरी-फरवरी तक जल स्रोतों का सूख जाना।
- सिचाई संसाधनों की कमी।
- मृदा क्षरण के कारण उपज प्रभावित होना।
- बंजर भूमि की अधिकता।
- जीवकोपार्जन हेतु प्रवास।

02 परियोजना से सम्बंधित समुदाय आधारित संगठन (CBOs)

52 गांवों में 4 गाँव आबादी रहित हैं। अत: परियोजना क्षेत्र के 48 गाँव में ग्राम सभा के माध्यम से 48 कृषि स्थायी समितियों (KSS) का गठन किया गया तथा 48 कृषि स्थायी समिति एवं 48 वाटरशेड डेवलपमेंट फण्ड के खाते बैंक में खुलवाए गये। जिस राशि से कुछ गांवों में कुर्सी, दरी इत्यादि सार्वजनिक सामग्रियों का खरीद किया गया। निम्नांकित समुदाय आधारित संगठनों का क्षमतावर्द्धन भी किया गया -

- ग्राम सभा
- कृषि स्थायी समिति
- जल छाजन विकास समिति
- किसान क्लब
- स्वयं सहायता समूह
- कृषि उत्पाद संगठन

03 परियोजना अंतर्गत गांवों की सूची

क्र.सं.	प्रखंड	पंचायत	गाँव	क्र.सं.	प्रखंड	पंचायत	गाँव
1			हरिरखा	25			बाबूडीह
2			बरवां	26			बड़ावा
3			शहरबेड़िया	27			डांड
4			डुमरिया	28			चरकमारा
5			डांडपूजा	29			मंझलाडीह
6			अंबाबांक	30			बाघमारा
7	फतेहपुर	डुमरिया	परासी	31			दुमदुमी
8			मुर्गाबनी	32	फतेहपुर	सिमलडूबी	जलाई
9			दीपाया	33			पाटनपुर
10			तोरो	34			उदलजोरी
11			दलबेड़ीया	35			लकड़ाकुंडा
12			धोवाना	36			सिमलडुबी
13			करमाचक	37			करमाटाड़
14			नीलकंठपुर	38			नासुजलाई
15			तिलाकी	39			खमारचक
16			तारापेतिया	40			मोहनाबांक
17			सालपतरा	41	फतेहपुर	बिन्दापाथर	लाखियाबाद
18			मुड़ाबहाल	42			मधुरा
19			कालपहाड़ी	43			पिंडरगड़िया
20			भेलाडंगाल	44			बंदरडीहा
21	फतेहपुर	खमारबाद	घाघर	45			मनिहारी
22			बरमसिया	46	नाला	बंदरडीहा	सुन्दरपुर
23			बंदरपहाड़ी	47			हैदलबांक
24			गुलुडुमरिया	48			चकथारी
				49			पिपला
				50			महजोरी
				51	नाला	कुलडंगाल	कुंजबोना
				52	नाला	जामदेही	लाखियाबाद(J)

04 जलछाजन परियोजना के हितग्राही (Stakeholders)

- जलशक्ति मंत्रालय
- झारखंड राज्य जलछाजन मिशन-SLNA
- जिला प्रशासन
- जल छाजन प्रकोष्ठ सह आंकड़ा केंद्र
- प्रखण्ड स्तरीय पदाधिकारी एवं कर्मी
- वन विभाग, कृषि विभाग तथा मत्स्य विभाग
- पंचायती राज संस्थानों के सदस्यगण
- परियोजना क्रियान्वयन एजेंसी
- सरकारी व गैर सरकारी (सहयोगी) संस्थान
- स्थानीय निकाय
- जलछाजन विकास दल
- संवेदक एवं दुकानदार
- महिला, बच्चे, किसान, दिव्यांगजन (समस्त समुदाय)

05 जलछाजन विकास दल की पहुँच

परियोजना क्रियान्वयन एजेंसी की टीम की पहुँच 52 गांवों के सभी सीमाओं तक नियमित होती रही तथा समुदाय के सभी वर्गो से संपर्क स्थापित करते हुए उन्हें परियोजना का उद्देश्य, कार्यशैली इत्यादि संबधी जानकारियां दी गयी। **Social Mobilization** करते हुए सम्बद्ध लाभों को बताया गया और सहयोग, समन्वय हेतु अपील की गयी। प्रत्येक गाँव की भौगौलिक स्थिति को देखते हुए स्थान उपलब्धता एवं ग्राम सभा द्वारा जन उपयोगी संसाधनों की मांग के आधार पर **JSWM / SLNA** से स्वीकृति प्राप्त कर संरचनाओं का निर्माण करवाया गया। साथ ही जरुरत के अनुसार क्षमतावर्धन, प्रशिक्षण आदि किये गए। बीज, जैविक खाद, मत्स्य अंगुलिकाएं एवं पौधों इत्यादि का वितरण करते हुए उत्तम पद्दति का प्रत्यक्षण करवाया गया तथा **WDT** की देख- रेख में किसानों की खेतों में उत्कृष्ट खेती का प्रदर्शन किया गया जिसका अवलोकन तथा मूल्यांकन भी विभिन्न हितग्राहियों द्वारा किया गया। अत: विभिन्न गतिविधियों के साथ प्रत्येक गाँव में प्रगतिमूलक पहुँच स्थापित की गई। **Ridge to Valley Approach** हेतु मुख्यत: तीन तरह के संरचनाओं का निर्माण करवाया गया।

06 मृदा एवं नमी संवर्धन (Soil moisture Conservation) से सम्बंधित संरचनाएं -

मृदा एवं नमी संवर्धन हेतु नाला प्रखंड के बंदरडीहा पहाड़ी में 1.99 हे. पर **DCT** का निर्माण के साथ-साथ स्थान उपलब्धतता के अनुसार प्राय: सभी गाँवों में 20.72 हे. पर **WAT**, 11.23 हे. पर फार्म बंडीग तथा 230.4 हे. पर **TCB** निर्माण करवाया गया।

07 जल संचयन हेतु संरचनाएं (Water Harvesting Structures)

परियोजना क्षेत्र में जल संचयन एवं संवर्धन के लिए 104 (100X100X10) फार्म पोंड, 86 (60X60X10) डोभा, 10 कच्चा चेक डैम **(ECD)**, 15 पक्का चेक डैम (**MCD**) तथा 18 ड्रम चेक डैम (**DCD**) का निर्माण करवाया गया।

08 वानस्पतिक एवं अभियंत्रण संरचनाएं (Vegetative & Engineering Structres)

इसके तहत 479 घन मीटर लूज बोल्डर स्ट्रक्चर (**LBS**) का निर्माण करवाया गया।

निर्मित संरचनाओं की सूची :-

TCB	WAT	Farm Bund	DCT	Farm Pond	Dova	ECD	MCD	DCD	LBS
Ha.	*Ha.*	*Ha.*	*Ha.*	*Nos.*	*Nos.*	*Nos.*	*Nos.*	*Nos.*	*Cum.*
230.4	20.72	11	1.99	104	86	10	15	18	479

09 परियोजना अन्तर्गत शिक्षण, Crop Demonstration एवं बीज तथा पौधों का वितरण भी किया गया

परियोजना अवधि में 500से अधिक किसानों तथा महिलाओं का क्षमतावर्धन किया गया जिनमें से 124 महिला किसान को गृह वाटिका, पोषण वाटिका, कृषि वानिकी मत्स्य पालन व प्रबंधन, पशुचारा उत्पादन इत्यादि विषय पर क्षमता वर्धन प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही दलहन, तिलहन, आलू, चना और विभिन्न सब्जियों के बीज के साथ-साथ फलदार पौधों का वितरण करते हुए कृषि पद्दति प्रदर्शन, मछली अंगुलिकाओं का वितरण इत्यादि गतिविधियाँ की गयी।

10 अभिसरण (Convergence)

बन्दरडीहा पहाड़ी के किनारे जो **DCT** का निर्माण हुआ है, उससे पहाड़ी तथा आस-पास की वनस्पतियाँ तथा पशु - पक्षियों पर भी काफी अनुकूल प्रभाव देखने को मिलते हैं। तरह - तरह की पक्षियों तथा कीट - पतंगों को आना - जाना लगा रहता है। कुछ नई प्रजाति के पक्षी भी नजर आने लगे हैं। इस पहाड़ी पर वन विभाग द्वारा काजू तथा अन्य पौधे काफी मात्रा में लगाये गए हैं। इसके अतिरिक्त अन्य विभागों द्वारा भी इस प्रकार के संसाधनों को विकसित किया जा रहा है।

परियोजना पर्यवेक्षण के दौरान मथुरा गांव के किसानों ने बिजली उपलब्धता कराने का अनुरोध डी.डी.सी. साहब से किया तथा 7 दिनों के अंदर ही गांव के लोगों को निर्बाध बिजली मिलने लगी तथा खेती के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध होने लगा। पुरे गांवों में खुशियों की लहर दौड़ गई।

यदि पैदावार की तुलनात्मक परिणाम पर गौर किया जाए तो हम इस प्रकार देख सकते हैं :-

क्रं सं	फसल	परियोजना पूर्व उपज		वर्तमान उपज	
		क्षेत्र (हे.)	उपज Kg प्रति (हे.)	क्षेत्र (हे.)	उपज Kg प्रति (हे.)
1	धान	4900	2600	5213	2800
2	गेहूँ	375	1400	408	1600
3	दलहन	175	900	206	1020
4	सब्जी	100	250	160	320
5	सरसों	50	300	252	362
6	आलू	75	275	110	340
7	अन्य	10	125	18	150

11 उपलब्धियाँ :-

परियोजना क्षेत्र के किसानों का कहना है कि उपरोक्त संरचनाओं के निर्माण से निमांकित उपलब्धियां हुई है :-

पहले जहाँ बरसात खत्म होने पर दिसम्बर-जनवरी में ही धरातल सूखने लगता था और फरवरी तक घास मर जाते थे, वहाँ TCB, WAT या फार्म बंड के हो जाने से फरवरी- मार्च तक आस - पास नमी बनी रहती है और पशुओं के लिए हरा घास मिलता रहता है। फलस्वरूप पहले जहाँ किसानों के घरों में 1-2 दुधारू पशु हुआ करते थे वहाँ आज 3-4 पशु पाये जाते हैं। अर्थात जिस घर में पहले 3-4 ली. दूध होता था, आज वहाँ 7-8 ली. दूध होने लगा है। तोड़ो, दलबड़िया,बाबूडीह, जलाई, नामूजलाई, पिंडरगडिया, मथुरा, घाघर इत्यादि गांवों के लगभग 50 किसान 8-10 की संख्या में दुधारू पशु रखते हैं और प्रत्येक किसान 50-60 ली. दूध रोज 50 रुपये प्रति ली के दर से बेचते हैं। साथ ही वे अपने घरों में पर्याप्त मात्र में दूध, दही, घी इत्यादि का उपयोग करते हैं। दलबेडिया, मथुरा, पिंडरगडिया में TCB के अन्दर कुछ किसान दलहन, तिलहन इत्यादि की खेती भी कर रहे हैं जबकि पूर्व में यहाँ बंजर भूमि हुआ करती थी। बोडवा में प्रशांत कुमार यादव ने TCB के अन्दर फलदार तथा ईमारती पेड़ों का बाग भी लगाया है जिसमें साल में दो बार आम फलता है और पेड़ों के नीचे उनके द्वारा हल्दी की भी खेती की जाती है।

डोभा, तालाब और चेक डैम के निर्माण से भी काफी फायदा हुआ है। किसानों का कहना है कि संरचनाओं के आस-पास काफी दिनों तक नमी बनी रहती है। जिन धान के खेतों में पहले पटवन की जरुरत पड़ती थी, संरचना निर्माण के बाद बिरले ही धान में पटवन की जरुरत पड़ती है। यदि पटवन की जरुरत पड़ती भी है तो जलछाजन परियोजना के तहत निर्मित जल स्रोतों से पटवन के लिए पर्याप्त पानी मिल जाता है। पहले जिन खेतों में मात्र एक ही फसल अर्थात धान ली जाती थी वहाँ आज अनेक ऐसे खेत है, जहाँ धनकटनी के बाद पुन: सरसों, आलू, गेहूं अथवा रब्बी की सब्जियां भी उगाई जा रही है। किसानों ने बताया कि इस साल यानि 2023 में वर्षा नहीं होने पर भी रब्बी की खेती अच्छी हुई है। पूर्व में जहाँ कुएं का जल स्तर 12-14 मी. रहता था वहाँ परियोजना क्रियान्वयन के बाद जल स्तर 8-10 मी. पर आया है। इसी प्रकार बोर-वेल का जल स्तर 60-70 मी. की जगह 50-60मी. पर पहुंचा है। पेयजल की समस्याओं से भी निजात मिलना शुरू हो गया है।

मछली पालन और बतख पालन में वृद्धि होने से तालाब तथा डोभा के लाभुकों की आय में वृद्धि हुई है। इस योजना से निर्मित तालाबों के लाभुकों को सालाना 80-100 किलो मछली की प्राप्ति होती है, जिससे 10-15 हजार रुपये उन्हें अतिरिक्त वार्षिक आय होता है। डोभा में 60-80किलो मछली का उत्पादन होने से लाभुक को 8-10 हजार रुपये अतिरिक्त लाभ होता है। लाभुक के अलावा अन्य ग्रामीणों ने भी बत्तख पालन बढाया है, पहले जिन घरों में एक भी बत्तख नहीं होता था, उन घरों में आज 6-10 बत्तख रखे जाने लगे हैं, जिसके अंडे व मांस से प्रति किसान 08-10 हजार रुपये सालाना आमदनी कर रहे हैं। किसानों का कहना है कि बत्तख का अंडा 10-12 रुपये में बिकता है और बत्तख भी 250-300 में बिकता है।

डोभा, तालाब व चेक डैम के निर्माण होने से परिणामस्वरूप जैव विविधता तथा पर्यावरण पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ा है। घोंघा, केंचुआ, छोटी मछलियाँ इत्यादि जो बिलुप्तता के कगार पर थे, फिर से पनपने लगे हैं। आस- पास की वनस्पतियाँ भी हरी - भरी रहने लगी हैं। फरवरी - मार्च माह में गाँव के बच्चे काफी मात्रा में मछलियाँ पकड़ते हैं।

12 संरचना आधारित परिणाम Deep Contour Trenches (DCT)

- बंदरडीहा पहाड़ी पर वनस्पति का संरक्षण और संवर्धन हुआ। पहले ऊपर तक पशु चढ़कर चर जाते थे और पौधे नष्ट हो जाते थे। ट्रेंच कट जाने के बाद उन सभी पौधों का बचाव होने लगा। वन विभाग के सौजन्य से आज पुरे पहाड़ी पर काजू के पौधे लहलहा उठे हैं जहाँ Deep Contoor Trench बनाये गये।
- ट्रेंच में पानी के जमने से आस - पास के खेतों में काफी दिनों तक नमी बनी रहती है। नमी के कारण पहाड़ी के नीचे ट्रेंच के बाहर काफी घास होने पर पशुओं को चरने में आसानी होती है।
- वनस्पतियों के संवर्धन से आस - पास का वातावरण अच्छा रहता है। कई तरह के आयुर्वेदिक औषधियों के पौधे उपलब्ध हो जाते हैं।

13 Trench cum Bunds (TCB) / Water Absorption Trench (WAT)

TCB / WAT के कारण आस - पास की जमीन में बरसात के बाद काफी दिनों तक नमी बनी रहती है। इन संरचनाओं के आस - पास घास के उगने से पशुओं को हरा चारा भी मिलता है। फलस्वरूप पहले से ज्यादा पशुधन बढाया गया है। जितने भी TCB निर्माण हुए हैं उनमें से ग्राम सभा की स्वीकृति पर 92 हे. गोचर भूमि पर TCB निर्माण कर ग्रासलैंड विकसित किया गया है। क्षेत्र के 20 प्रतिशत ऐसे किसान हैं, जो पहले दो - तीन गाय, भैस, बकरी, भेड़ इत्यादि रखते थे वे लोग वर्तमान समय में 8 - 10 की संख्या में गाय, भैस, बकरी, भेड़ इत्यादि रखने लगे हैं। पहले जो 2-4 ली. दूध प्रतिदिन बेचते थे, आज वे 15 - 20 ली. दूध बेचने लगे हैं। उनके घर के बच्चों को भी पर्याप्त दूध पीने को मिल जाता है। बोडवा, जलाई, हरिरखा में जहाँ पहले बंजर जमीन थी, आज TCB के बीच में वहां विभिन्न प्रकार की खेती तथा बागवानी की जा रही हैं। सब्जियों तथा सरसों की खेती के साथ - साथ फलदार तथा ईमारती पेड़ भी लगाये गए हैं।

केस स्टडी - 1

लाभुक का नाम– प्रशांत यादव, गाँव– बोडवा, प्रखंड - फतेहपुर, जिला - जामताड़ा / संरचना का नाम TCB

प्रशांत जी एक पर्यावरण प्रेमी काफी मेहनती किसान – सह – पारा शिक्षक हैं / लोक प्रेरणा की टीम जब इस गाँव में NB – RIDF जलछाजन परियोजना के तहत निर्मित TCB का visit करने दिसम्बर 2021 को गयी तो प्रशांत, उनके पिता तथा एक मजदूर आम बगीचे के बीच लगे सरसों की खेती का पटवन कर रहे थे / TCB के अंतर्गत बहुत ही सुन्दर ढंग से बागवानी की गयी है / इन्होने बताया कि लगभग 1.5 एकड़ जमीन में बाहर से मंगवाकर उत्तम कोटि का 120 आम, 70 सागवान, 10 महोगनी, 10 स्प्रिंग बेल तथा 4 गम्हार का पेड़ लगाया है / फ़िलहाल सभी पेड़ 6 - 7 फीट के हैं / फल अभी नहीं आये है / करीने से लगे पेड़ों के बीच सरसों की खेती बहुत ही सुन्दर ढंग से की गयी है / चारों तरफ बांस की घेराबंदी की गई है / उन्होंने कहा कि चारो तरफ घेरे से सटाकर ओल लगायेंगे तथा पेड़ों की छाया में हल्दी लगायेंगे /

प्रशांत जी कहते हैं कि जब हम आम का पौधा लगाने की योजना बना रहे थे, उसी दौरान लोक प्रेरणा की टीम गाँव आई थी / उन्होंने सलाह दिया कि बागवानी से पहले TCB करवा लें, तो बेहतर होगा / उनकी सलाह मानकर हमने TCB करवा लिया /

आज सचमुच काफी फायदा हुआ/ TCB के कारण हमारी बंजर भूमि उपजाऊ में बदल गयी / पटवन के बाद काफी दिनों तक नमी बनी रहती है और आज हमारा परिवार इसे लहलहाता देख काफी ख़ुशी महसूस करते हैं तथा आर्थिक विकास हुआ है / पहली बार मुझे संस्था द्वारा बहुत ही उत्तम कोटि का सरसों बीज मिला था / तीन साल से हमारे घर में वही सरसों और उसका तेल चल रहा है / आसपास घास की उपज भी इतनी होती है कि हमारी दो देसी नस्ल की गायें 10kg दूध देती है /

उक्त किसान की अपेक्षा है कि उन्हें पटवन के लिए एक सोलर पम्प उपलब्ध हो जाए / उत्तम कोटि का और अधिक पेड़ लगाने की भी ईच्छा है / साथ ही उनका एक ' जोरिया ' है, जिसमे चेकडैम बनवाना चाहते हैं /

14 FARM POND / DOVA

परियोजना क्षेत्र के किसान NB-RIDF जलछाजन परियोजना से निर्मित तालाबों की गुणवत्ता तथा उपयोगिता से काफी खुश हैं। उनका कहना है कि पूरे मापदंड के अनुरूप सभी तालाबों का निर्माण हुआ है, जिससे बहुआयामी फायदे मिलते हैं। आस - पास की खेतों में काफी दिनों तक नमी बनी रहती है। पहले कई बार धान को भी सिंचाई की जरुरत पड़ती थी। लेकिन तालाब निर्माण के बाद धान में पटवन की जरुरत पड़ी भी तो तालाब से आस - पास के सारे खेत सिंचित हो जाते हैं। पहले जहाँ एकमात्र फसल धान लिया जाता था। तालाब और डोभा निर्माण के बाद वहाँ कम से कम 2 या कहीं - कहीं 3 फसलें ली जा रही है। जैसे - सरसों, गेहूं, चना, आलू, कुदरूम अथवा अन्य सब्जियां मेड़ पर कद्दू, नेनुआ, कद्दिमा इत्यादि की खेती या अन्य पेड़ भी लगाया जाता है।

कुछ तालाबों के मेड पर सबई घास को डेमो के रूप में लगाया गया जिससे लोग अब रस्सी बनाने का भी काम शुरू कर अतिरिक्त आमदनी का श्रोत बना चुके हैं। यह इनोवेशन झारखण्ड में लोक प्रेरणा के द्वारा ही प्रथम बार करने का प्रयास किया गया, एवं स्थानीय स्तर पर बड़े पैमाने पर मिट्टी क्षरण रोकने का सफल प्रयास किया गया। गाँव के लोग नहाने - धोने का भी काम कर लेते हैं। कुछ ऐसी भी जगहें हैं, जहाँ पहले कोई भी खेती होती ही नहीं थी, आज वहां खेती होने लगी हैं। पानी की उपलब्धता के बाद कुछ नवाचार भी देखने को मिल रहे हैं। जैसे - गुलुडुमरिया में संथाल किसान के द्वारा मूंगफली की खेती और तरबूजे की खेती भी की गयी।

केस स्टडी - 2

लाभुक का नाम– संतोष मुर्मू , गाँव– अंबाबांक प्रखंड– फतेहपुर , जिला– जामताड़ा, संरचना का नाम– तालाब

संतोष जी का कहना है कि लोक प्रेरणा द्वारा NB-RIDF जलछाजन परियोजना के तहत 2020-21 में दाग न० 961-962 पर एक तालाब का निर्माण करवाया गया था | जिसकी Bunding इतनी अच्छी है कि उस पर चारों तरफ घनी झाड़ी उग आई है, जो हम जलावन के काम में उपयोग करते हैं | तालाब के आसपास हमारा और हमारे गोतिया का लगभग 2 हेक्टेयर खेत है, जिसमें पहले केवल धान ही होता था, तालाब निर्माण के बाद धनकटनी होते ही अब हम उसममें गेंहू, आलू और सरसों लगाकर दोहरा लाभ ले रहे हैं |
इन्होंने गत वर्ष लगभग 10 quintal आलू, 05 quintal गेहूं, और 15 quintal सरसों की खेती हुई थी | गत वर्ष संस्था द्वारा 3 kg मछली का जीरा डाला गया था,जिससे 65kg मछली का उत्पादन हुआ था| इस वर्ष 5 kg जीरा हमने डाला है, जिससे लगभग 2 quintal मछली उत्पादन की उम्मीद है | साथ ही आसपास के लोगों ने बतखों की संख्या बढाया है, जो वहां जाकर चरते हैं | उक्त तालाब में लोग नहाने-धोने का भी काम करते हैं |

केस स्टडी - 3

लाभुक – लुबुनी हांसदा (F), ग्राम – गुलुदुमरिया , प्रखंड – नाला , जिला – जामताडा, संरचना – तालाब

लुम्बिनी कहती है कि गत वर्ष 1 क्विंटल मछली का उत्पादन हुआ था. यह तालाब आबादी के बीच गाँव में ही स्थित है. अतः वहाँ के ST समुदाय के 10-12 परिवार ने तालाब निर्माण के बाद 60-70 बत्तख पाल लिया है. इस से पहले इस गाँव में मछली और बत्तख पालन नहीं के बराबर हुआ करता था. फ़िलहाल तालाब के तीन ओर काफी मात्रा में सरसों की खेती की गयी है. तालाब के आस-पास काफी दिनों तक नमी बनी रहती है. वहाँ के लोगों ने बताया कि इस साल जरुरत के अनुसार धान की खेती में भी इस तालाब से पटवन किया गया था, जबकि पहले जब तालाब नहीं था, तो धान के खेत में पानी की कमी हो जाने पर धान मर जाता था. लेकिन अब स्थिति बदल गयी है. अब इस तालाब के सहारे धान की फसल को बचा लिया जाता है. साथ ही धनकटनी के बाद अन्य फसलों के उत्पादन की संभावनाएं बढ़ी है ; जबकि पहले केवल वर्षाजल पर निर्भर रहकर साल में केवल एकबार धान की ही खेती होती थी. वह भी सूखा पड़ने पर हमें हाथ मलना पड़ता था और आर्थिक कठिनाई झेलना पड़ता था। अब उक्त तालाब से वहाँ के स्थानीय लोग कई तरह के लाभ ले रहें हैं :--

1. रबी और खरीफ की खेती में पटवन 2. मछली पालन 3. बत्तख पालन 4. नहाना, धोना, बर्तन धोना 5. ईंट बनाने में पानी का उपयोग 6. नवाचार, जैसे – मूंगफली की खेती 7. पशुओं को पानी पिलाना (पशुधन की वृद्धि) 8. मकान या अहाता निर्माण में पानी का उपयोग इत्यादि. कुल मिलाकर देखा जाय तो वहाँ के ग्रामीणों का आर्थिक एवं सामाजिक विकास सुनिश्चित हुआ है |

प्रत्येक तालाब या डोभा से 50-100 किलो मछली का उत्पादन होने लगा है ।

बत्तख पालन में भी इजाफा हुआ हैय अंडे और बत्तख बेचकर कुछ किसान महीनें में 2-3 हजार रुपये अतिरिक्त आमदनी कर रहे हैं। किसानों का कहना है कि इस साल वर्ष 2022 में भीषण सुखाड़ के बावजूद भी 60 प्रतिशत धान की खेती और 90 प्रतिशत रब्बी की खेती संभव हो पाया है। कुल मिलाकर जीवन स्तर में सुधार आया है। स्वास्थ्य तथा शिक्षा की पहुँच भी पहले की अपेक्षा बढ़ी है ।

15 पक्का चेक डैम / ड्रम चेक डैम (MCD/DCD)

स्थानीय प्राकृतिक नाले या जोरिया में चेक डैम का निर्माण बहुत ही सुन्दर और मजबूत हुआ है। जो पानी बहकर चला जाता था, अब चेक डैम में पानी को रोक देने से आस-पास की खेती पहले से बेहतर होगी। आस - पास नमी भी रहेगी और जरुरत पड़ने पर पटवन भी किया जा सकेगा। Sub-Surface & Ground Water भी Recharge होते दिखने लगेगा।

16 कच्चा चेक डैम (ECD)

कच्चा चेक डैम ऐसा स्थान पर बनता है जहाँ पर ढालूनुमा बंजर जमीन होता है और उसके बाद खेत बहियार होता है।ऐसी जगह में प्राय: ये समस्या होती है कि बरसात का पानी ऊपर से नीचे आते-आते काफी रफ्तार पकड़ लेता है। पानी बह कर या तो बर्बाद हो जाता है या खेत की फसल को बहा देता है और खेतों के मेड़ को भी तोड़-फोड़ देता है। कच्चा चेक डैम के बनने से उपरोक्त समस्यायों से निजात पाया जा सका। साथ ही एक चेक डैम से उसके चारों ओर के खेतों की सिंचाई कर तरह-तरह की फसलें उगाई जा सकी। मछली तथा बत्तख पालन भी किया जाने लगा।

17 लूज बोल्डर स्ट्रक्चर (LBS)

जोरिया में जो कई स्रोतों से पानी आता है, तो वह अपने रास्ते में मिट्टी का क्षरण करते हुए आस- पास के खेतों को नुकसान पहुँचता है। पानी के तेज बहाव को तोड़ने के लिए बोल्डर को बिछाकर लूज बोल्डर स्ट्रक्चर या गली प्लग बनाया जाता है। जलछाजन परियोजना के तहत लोक प्रेरणा के द्वारा यह भी बनवाया गया है।

18 निष्कर्ष

झारखण्ड राज्य के जामताड़ा जिले के फतेहपुर तथा नाला प्रखंड के 7 पंचायतों के 52 गांवों में परियोजना क्रियान्वयन एजेंसी के रूप में लोक प्रेरणा के सतत प्रयासों से विभिंन्न संरचनाओं का निर्माण तथा संपन्न विभिंन्न संस्थागत गतिविधियों से निम्नांकित निष्कर्ष निकलकर सामने आते हैं।

कच्चा चेक डैम बन जाने से बरसात का पानी का संचयन और संवर्धन भी हो जाता है। जलस्तर बढ़कर आस - पास के खेतों में नमी बनी रहती है। जरुरत पड़ने पर सिंचाई भी की गई। मछली का भी उत्पादन किया गया। बतख पालन को भी बढाया गया। नहाने - धोने, ईंट बनाने और पशु को पानी पिलाने में भी सुविधा हुई। जहाँ सिर्फ धान की ही खेती होती थी, पानी की उपलब्धता से रब्बी की फसलें उगाई जा सकेगी।

जलछाजन परियोजना के तहत लोक प्रेरणा के द्वारा जितनी भी संरचनाए बनबाई गयी है, सभी मापदंड के अनुरूप, गुणवत्तापूर्ण एवं जन उपयोगी हैं।

- जिसके फलस्वरूप जल की कमी कम किया गया।
- जलस्तर बढाया गया।
- खेतों में नमी बढ़ी।
- पटवन की समस्या को कम किया गया।
- फसलों का उत्पादन बढा।
- नई फसलों को उगाया गया।
- बागवानी की गयी।
- मछली का उत्पादन बढा।
- पशुचारा की कमी को कम किया गया।
- पशुधन भी बढा।
- बतख पालन बढा।
- दूध का उत्पादन बढा।
- आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति बेहतर हुआ।
- रहन-सहन बेहतर हुआ।
- स्वास्थ्य तथा पोषण स्तर बढा।
- शिक्षा पर जयादा ध्यान दिया जाने लगा।
- पलायन में कमी आयी।
- बाल मजदूरी पर रोक लगा।
- महिलाओं की भागीदारी बढ़ी।

18.1 जलस्तर में हुई वृद्धि

जलछाजन परियोजना क्षेत्र में जलस्तर का बढना इस कार्यक्रम की बड़ी सफलताओं में से एक है। इस परियोजना क्षेत्र में जहाँ पहले दिसम्बर- जनवरी में जलाशय और गहरे खेत सूख जाया करते थे, वहाँ आज फरवरी- मार्च तक नमी रहने लगी है तथा आंशिक पानी मिलने लगा है, जहाँ कुंए का जलस्तर 12-14 मीटर हुआ करता था, आज वहाँ 9-11 मीटर पर पहुँचा है। वहीं बोरवेल का जलस्तर 60-70 मीटर की जगह 50-60 मीटर पहुंचा है। जलस्तर के बढने से पेयजल की समस्याओं से भी उबरने में स्थानीय लोगों में मददगार साबित हुआ है।

18.2 मृदाक्षरण में आई कमी

आज 40%-45% मृदा क्षरण में कमी आई हैं फलस्वरूप खेती की सम्भावानाएं बढ़ी है परियोजना क्षेत्र के किसान अथवा कृषक मजदूर नवाचार के साथ कई तरह के फसलों का लाभ ले पा रहे हैं, जिनमें से मुख्यत: सरसों, गेहुं, आलू, दलहन और साग- सब्जियां शमिल है।

18.3 जल प्रवाह में हुई कमी

समुदाय के अनुसार जलछाजन से संबद्ध संरचनाओं के निर्माण से वर्षा जल को रोक कर जल बहाव में काफी कमी लाया गया है परिणामत: काफी दिनों तक नमी भी बरकरार रहती है। वनस्पतियों में भी इजाफा हुआ है।

18.4 फसलों तथा कृषि उत्पादों में हुई वृद्धि

परियोजना पूर्व जहाँ केवल खरीफ की खेती धान होती थी, आज वहाँ धान के आलावा रब्बी की मौसम में सरसों, दलहन तथा सब्जियों की खेती भी होने लगी है। इसके साथ-साथ फसलों में जब फल व दाने आते हैं, पहले की अपेक्षा अधिक सघन देखने को मिल रहे हैं। कृषि उत्पादकता की दृष्टिकोण से धान की उपज जहाँ 4900 हे. में होती थी आज वहाँ 5213 हे. में होने लगी है।

इसी प्रकार यदि इन फसलों की तुलना की जाए तो गेहुं 375 हे. के स्थान पर 408 हे. में, दलहन 175 हे. के स्थान पर 206 हे. में सब्जी 100 हे. की जगह 160 हे. सरसों व अन्य तिलहन 150 हे. की जगह 252 हे. आलू 75 हे. की जगह 110 हे. में तथा अन्यान्य फसल 10 की जगह 18 हे. में होने लगे हैं। फसलों में प्रबलता भी देखी जा रही है। यदि उपरोक्त फसलों की तुलना प्रबलता के आधार पर कियाजाए तो, धान जहाँ 2600 किलो/हे. में हुआ करता तथाय आज वहाँ 2800 किलो/हे. हो रहा है. इसी प्रकार गेहुं 1400 किलो/हे. की जगह 1600 किलो/हे., दलहन 900 किलो/हे. की जगह 1020 किलो/हे., सब्जियां 250 किलो/हे. की जगह 320 किलो/हे., सरसों 300 किलो/हे. की जगह 370 किलो/हे., आलू 275 किलो/हे.. की जगह 340 किलो/हे. तथा अन्यान्य फसल 125 किलो/हे. की जगह 150 किलो/हे. हो रहेहैं।

18.5 अपेक्षाकृत कम परिश्रम में होने लगी खेती

परियोजना क्रियान्वयन के फलस्वरूप मृदा क्षरण की कमी, नमी और जलस्तर की बढ़ोतरी के कारण "पूर्व की अपेक्षा किसानों या खेतिहर मजदूरों को कम मेहनत करना पड़ रहा है." ऐसा क्षेत्र के किसानों का कहना है। उनका कहना है कि जोतने-कोड़ने में अब उतना जायदा मेहनत नहीं करना पड़ रहा है। पहले मिट्टी काफी कठोर रहा करती थी। पहले जहाँ किसी फसल को 4-5 पटवन की जरुरत पड़ती थी। आज वहाँ 3-4 ही पटवन करना पड़ता है। साथ ही पहले की अपेक्षा पानी भी कम खर्च होता है अर्थात मिट्टी कम पानी सोखता है। बीज वितरण के साथ - साथ लोक प्रेरणा के द्वारा Agri-82 नामक आर्गेनिक Adjuvent भी दिया गया था, जिसके उपयोग से देखा गया कि फसलों को 30-35 प्रतिशत कम पानी का जरुरत पड़ा। अत: वर्ष 2023 में सूखा पड़ने के बावजूद भी रब्बी की पर्याप्त खेती की गयी। सबसे ज्यादा उपज सरसों, आलू और टमाटर की हुई है। डुमरिया, तोड़ो, बारवां, मथुरा इत्यादि गाँव में दिसम्बर-जनवरी में लहलहाते खेतों के नजारे वास्तविक क्रांति के द्योतक हैं। क्षेत्रीय किसान कहते हैं कि 8-10 साल पहले तो धान को भी सींचने का जरुरत पड़ जाता था लेकिन डोभा, फार्म पोंड या चेक डैम के नजदीक के धान के खेतों को अब सींचने की जरुरत नहीं पड़ती है। फलस्वरूप परिश्रम और पैसे दोनों चीजों की बचत हो रही है

18.6 महाजन तथा कर्जबोझ में आई कमी

खेती करने में कम मेहनत के लगने, कम मजदूर के लगने, बीज, खाद, सिंचाई इत्यादि पर कम लागत और ज्यादा फायदा होने का असर भी साफ-साफ नजर आने लगा है। छोटे किसान कहते हैं कि हमें प्राय: खेती के समय या बीच में महाजनों से मोटे ब्याज पर कर्ज लेना पड़ता था। लेकिन अब धीरे-धीरे कम पूँजी और अधिक आय होने से हमारा कर्ज का बोझ घटता नजर आ रहा है और अगर ऐसा ही चलता रहा तो जल्दी ही हमें महाजनों से छुटकारा मिल जाएगा।

18.7 रोजगार की संभावनाएँ बढ़ी और प्रवास में आई कमी

संरचनाओं के निर्माण में स्थानीय मजदूरों के लगने, अधिक मात्रा में कृषि उत्पाद, दूध, मछली, मुर्गी, बत्तख, अंडे इत्यादि के होने से रोजगार के अवसर बढ़े हैं। किसान अपने उत्पादों को स्थानीय हाट-बाजार में ले जाकर बेच आते हैं। सभी गावों के आस-पास प्राय: सप्ताह में 2 दिन हाट लगता है। अच्छे उत्पादों को अच्छा दाम भी मिल जाता है। जिसके फलस्वरूप प्रवास की संभावनाओं में काफी कमी आई है। किसानों के देखा-देखी दुसरे तरह के मजदूर भी प्रवास पर जाने से कतराने लगे हैं।

18.8 सामाजिक व आर्थिक स्थिति में हुआ सुधार

मेहनत कम, आमदनी अधिक, प्रवास के खर्चे का बचत जोखिम की कमी होने से स्थानीय लोगों का सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होना शुरू हुआ है। विशेषकर ग्रामीण महिलाएं प्रसनन्ता व्यक्त करती है कि जलछाजन परियोजना के तहत बहुत हितकारी काम हुए हैं। पलायन की कमी, कर्ज से मुक्ति और आमदनी के बढ़ने से घर में सुख- सुविधाएं,स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण इत्यादि पर अनुकूल प्रभाव पड़ने लगे हैं।

18.9 महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव

जलछाजन विकास दल के द्वारा क्षेत्र भ्रमण, ग्राम सभा की बैठक, सभा, उन्मुखीकरण, कार्यशाला, प्रशिक्षण इत्यादि गतिविधियों के जरिए महिलाओं की भागीदारी में इजाफा हुआ है। कुछ कार्यक्रमों में तो शत- प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी देखी जा सकती है। संलग्न तस्वीरों पर गौर किया जाये तो तीन- चार कार्यक्रमों में एक भी पुरुष प्रतिभागी नजर नहीं आये थे। अत: यहाँ महिला सशक्तिकरण का अच्छा मिसाल के तौर पर देखा जा सकता है। गांवों में जाने पर भी प्राय: पुरुष सदस्य खेत-खलिहान अथवा कार्यस्थल पर रहते हैं, तब स्थानीय महिलाएं ही सवाल - जवाब में सहयोग करती हैं। प्राय: सभी CBOs में भी महिला सदस्य होती हैं और सक्रियता से भूमिका भी निभाती हैं। परियोजना क्रियान्वयन में महिलाओं का अच्छा सहयोग PIA को मिलता रहा है।

19 समस्याएं एवं चुनौतियाँ

जामताड़ा जिले के फतेहपुर तथा नाला प्रखंड अंतर्गत जिन गांवों में जलछाजन परियोजना का संचालन किया गया वहाँ की भौगोलिक तथा सामाजिक स्थिति में क्रियान्वयन काफी मुश्किलों भरा रहा। क्रियान्वयन में निम्नांकित बाधाएं एवं समस्याओं का सामना करना पड़ा। ग्रामीण क्षेत्र के अधिकांश लोगों में अर्थाभाव रहने, कम मजदूरी मिलने और रोजगार की कमी के कारण मजदूरों का आसानी से न मिलना एक आम बात थी। शुरुआत में रोजगार हेतु पलायन की समस्या थी। कृषि योग्य भूमि की कमी तथा बंजर, पथरीली पठारी भूमि की अधिकता थी। बरसात में आवागमन में कठिनाई का सामना करना पड़ता था और काम बंद हो जाया करता था। आदिवासी समुदाय की बहुलता और ग्रामीणों में संकोच की भावना, सोशल मोबिलाइजेशन के क्रम में कुछ ग्रामीणों ने बताया कि उन्हें पहले काफी बरगलाया जाता था। अत: वे जल्दी किसी पर विश्वास करने से कतराते थे। प्रत्येक गांवों में कई बार जाकर प्राय: सभी समुदाय के लोगों से मिलकर काफी समझाने- बुझाने के बाद कार्यारंभ किया गया। कार्ययोजना की स्वीकृति एवं भुगतान की प्रक्रिया में अनावश्यक विलंब होता रहा। सबसे जायदा परेशानी COVID-19 के कारण लगातार दो - ढ़ाई वर्षो तक सारी गतिविधियाँ प्राय: ठप रही। कभी - कभी वेबसाइट या सर्वर की तकनीकी खराबियों से होनेवाली परेशानियाँ। परियोजना समाप्ति के बाद भी कृषि स्थायी समिति और Watershed Development Fund का संधारण में परेशानी आई।

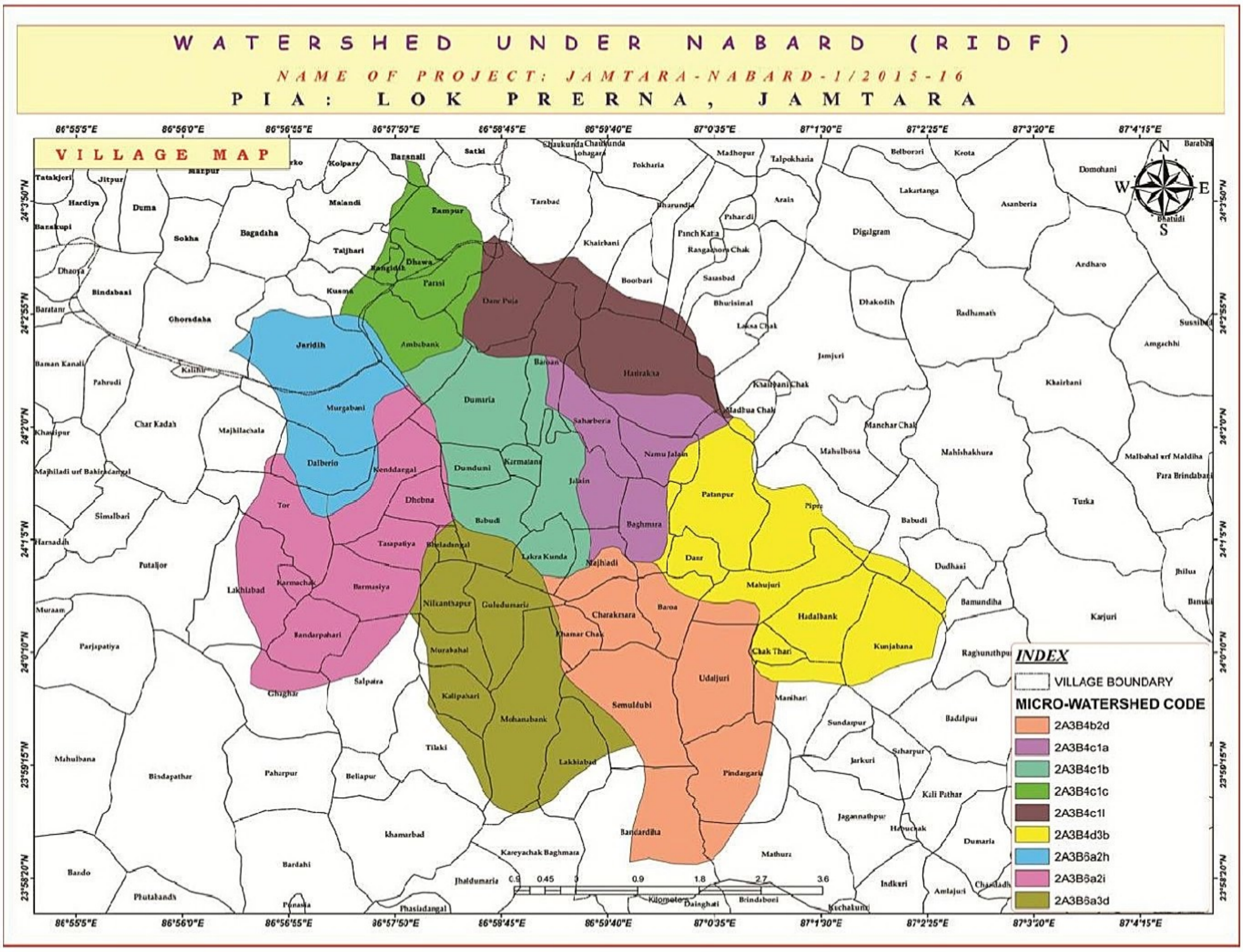

Legal Information

- *Name of the Organization* : ***LOK PRERNA***
- *Address* : *Belabagan, Main Road, Deoghar – 814112 (Jharkhand)*
- *Email* : *lp.jharkhand@gmail.com, info@lokprerna.org*
- *Website* : *www.lokprerna.org*
- *Contact No.* : *+91 9431132730*
- *Name & Designation of Chief Functionary* : *Mr. Satish Kumar Karna, (Director)* *Mr. Madhav Kumar Das (Secretary)*
- *Registration Under Act* : *Society Registration Act 21, 1860 from Patna, Bihar*
- *Registration No. & date* : *No. 22, 3rd April, 1992*
- *Registration Under Act* : *Society Registration Act, 1860 From Ranchi, Jharkhand*
- *Registration No. & date* : *No. 685, 9th December, 2009*
- *FCRA Registration No.* : *337680014(Renewed on 23.3.22)*
- *Date of FCRA Reg.* : *23rd December 2002*
- *IT – 12A Reg. Number* : *20/99 – 2000*
- *12A Renewal Certificate No.* : *AAAAL1326RE20168*
- *Date of Registration* : *23rd September, 2021*
- *NITI AAYOG Unique ID* : *JH/2009/0003959*
- *80G Reg. No.* : *AAAAL1326RF20216*
- *Date of Registration* : *2nd October, 2021*
- *CSR Certificate No.* : *CSR00013612*
- *Date of Registration* : *24th August, 2021*
- *PAN No.* : *AAAAL1326R*
- *TAN No.* : *RCHL00243F*
- *Date of Registration* : *17th July, 2009*

सादर सुझाव अपेक्षित
धन्यवाद !

श्री माधव कुमार दास
संस्थापक –सह– सचिव
लोक प्रेरणा

श्री सतीश कुमार कर्ण
संस्थापक –सह– निदेशक
लोक प्रेरणा

परियोजना क्रियान्वयन एजेंसी: **लोक प्रेरणा**
बेलाबगान मेन रोड, देवघर–814112 (झारखण्ड)
E-mail : info@lokprerna.org / lp.jharkhand@gmail.com